थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 1, अंक 4, जुलाई-सितम्बर 2024
Online Available : https://thati.net/

नई शिक्षा नीति 2020 के उच्चतर माध्यमिक शिक्षकों के तनाव पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. कंचन जैन, शिक्षाशास्त्र विभाग, सनराइज विश्वविघालय

शोध सार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020), जिसे 29 जुलाई 2020 को भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था। भारत की नई शिक्षा प्रणाली के दृष्टिकोण को रेखांकित करता है। यह नीति प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा के साथ–साथ ग्रामीण और शहरी दोनों भारत में व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए एक व्यापक रूपरेखा है। नीति का लक्ष्य 2030 तक भारत की शिक्षा प्रणाली को स्थानांतरित करना है। शिक्षकों को उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री के साथ–साथ शिक्षाशास्त्र में प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी, 2030 तक शिक्षक शिक्षा को धीरे–धीरे बहु–विषयक कॉलेजों में स्थानांतरित किया जाएगा और विश्वविद्यालय सभी बहु–विषयक बनने की दिशा में आगे बढ़ेंगे, उनका यह भी लक्ष्य होगा उत्कृष्ट शिक्षा विभाग स्थापित करने के लिए जो शिक्षा में बी.एड., एम.एड., पीएच.डी. डिग्री प्रदान करते हैं। 2020 तक, शिक्षक के लिए न्यूनतम डिग्री योग्यता ज्ञान और शिक्षाशास्त्र की एक श्रृंखला होगी और इसमें स्थानीय स्कूल में छात्र शिक्षण के रूप में मजबूत व्यावहारिक शिक्षा शामिल होगी। 2021 तक, शिक्षक शिक्षा के लिए एक नया और व्यापक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या कार्य एनसीएफटीई 2021, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सिद्धांत के आधार पर एनसीईआरटी के साथ परामर्श करेगा। नीति का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर सभी छात्रों को जुनून से प्रेरित होकर पढ़ाया जाए। , उच्च योग्य, पेशेवर रूप से प्रशिक्षित और अच्छी तरह से सुसज्जित शिक्षक अंत में, सिस्टम पर शिक्षक शिक्षा, देश में चल रहे घटिया स्टैंड–अलोन शिक्षक शिक्षा संस्थानों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी, जिसमें एनईपी के अनुसार आवश्यकता होने पर उन्हें बंद करना भी शामिल है।

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 1, अंक 4, जुलाई-सितम्बर 2024
Online Available : https://thati.net/

मुख्यशब्द : स्कूली शिक्षा व्यापक, नई शिक्षा नीति बहुविषयक, प्रारंभिक शिक्षा, एकीकृत, गुणवत्ता पाठ्यक्रम।

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति देश में उच्चतर माध्यमिक शिक्षकोंकी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए तैयार की गई थी और देश के सभी नागरिकों को शिक्षा सुविधाएं प्रदान करने पर केंद्रित थी। नई शिक्षा नीति को सभी स्तरों पर संपूर्ण शिक्षण पेशे में सबसे अच्छे और प्रतिभाशाली लोगों की भर्ती में मदद करनी चाहिए। स्कूली शिक्षकों का एक समूह बनाने में शिक्षक शिक्षा महत्वपूर्ण है जो अगली पीढ़ी को आकार देगी। शिक्षक तैयारी एक ऐसी गतिविधि है जिसके लिए बहु–विषयक परिप्रेक्ष्य और ज्ञान की आवश्यकता होती है। शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है। शिक्षा के क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक शिक्षकों का प्रदर्शन सबसे महत्वपूर्ण इनपुट है। शिक्षा व्यक्ति के साथ–साथ राष्ट्र को भी नया आकार देती है। शिक्षा किसी भी समाज में सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक और राजनीतिक विकास लाने में प्रमुख भूमिका निभाती है। शिक्षा लोगों को सही समय पर सही कार्य सीखने में मदद करती है। ऐसी शिक्षा के लिए कुशल शिक्षकों की आवश्यकता होती है। यह प्रसिद्ध कहावत है कि शिक्षक राष्ट्र निर्माता होता है। औपचारिक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में एक शिक्षक केंद्रीय व्यक्ति होता है। विद्यार्थियों का भविष्य शिक्षकों पर निर्भर करता है। समाज में शिक्षक के स्थान और महत्व को कभी भी कम नहीं आंका जा सकता। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की गुणवत्ता को उन्नत करने की आवश्यकता है। उच्चतर माध्यमिक शिक्षकों शिक्षा अपेक्षित मानकों पर खरी नहीं उतरी है। शिक्षक गंभीर रूप से सोचने और शिक्षण विधियों, सामग्री, संगठन आदि से संबंधित मुद्दों को हल करने में सक्षम नहीं हैं। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में व्यापक सुधार की आवश्यकता है और शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रम के पुनर्गठन पाठ्यक्रम को समाज की बदलती जरूरतों के अनुसार संशोधित करने की आवश्यकता है। यह पेपर भारत में शिक्षक शिक्षा के सामने आने वाली विभिन्न समस्याओं पर केंद्रित है। दुर्भाग्य से अभी भी सिस्टम में कई खामियां हैं। शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता और सुधार लाने के लिए

केंद्र और राज्य सरकारों को हाथ मिलाना चाहिए, तभी शिक्षक शिक्षा का उज्ज्वल भविष्य संभव है।

नई शिक्षा नीति 2020 के उच्चतर माध्यमिक शिक्षकों के तनाव प्रभाव

- विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोग का अभावः विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ दुनिया एक दूसरे पर निर्भर हो गई है और धीरे–धीरे एक वैश्विक गांव में तब्दील होती जा रही है। लेकिन उच्चतर माध्यमिक शिक्षकों या शिक्षक–शिक्षा के लिए शैक्षिक कार्यक्रमों ने छात्रों के बीच शिक्षण कौशल विकसित करने के लिए नवीनतम तकनीकों का पूर्ण उपयोग नहीं किया है। शिक्षक शिक्षा प्रशिक्षण संस्थानों में रूढ़िबद्ध एवं सैद्धांतिक पद्धतियाँ अब भी अधिकप्रचलित हैं।
- दोषपूर्ण पाठ्यक्रमः पाठ्यक्रम कठोर और पारंपरिक बना हुआ है। यह अत्यधिक सैद्धांतिक है और व्यावहारिक पहलू को कम महत्व दिया गया है। सिद्धांत और व्यवहार का एकीकरण बहुत कम है। इसमें यथार्थवाद का अभाव है और यह जीवन और समुदाय से संबंधित नहीं है।
- चयन की समस्याः उच्चतर माध्यमिक शिक्षकों शिक्षा की चयन प्रक्रिया में बहुत सारी खामियाँ हैं, यहाँ तक कि कोई स्पष्ट प्रक्रिया नहीं है जिसका शिक्षक शिक्षा के लिए छात्रों को प्रवेश देते समय पालन किया जाना चाहिए। प्रवेश के दौरान छात्रों के साक्षात्कार के अलावा कोई दृष्टिकोण, योग्यता या कोई उपलब्धि परीक्षण आयोजित नहीं किया जाता है। न्यूनतम आवश्यक योग्यता रखने वाले किसी भी उम्मीदवार को पाठ्यक्रम में आसानी से प्रवेश मिल गया है।
- अलगाव की समस्याः इस समस्या को तीन स्तरों पर देखा जा सकता हैः
  - विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों के बीच अलगाव। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान भी समुदाय और वास्तविक जीवन से अलग–थलग हैं।
  - शिक्षा महाविद्यालयों को विश्वविद्यालय से अलग करना।

- स्कूल के दैनिक जीवन से कॉलेजों का अलगाव और शिक्षण के पारंपरिक तरीके: आने वाले शिक्षकों को पढ़ाने के लिए शिक्षण के पारंपरिक तरीकों का आज भी व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। छात्र नए आविष्कारों और प्रयोगों से परिचित नहीं होते हैं। आधुनिक कक्षा संचार उपकरण संस्थानों में नगण्य पाए जाते हैं। हम छात्र शिक्षकों को शिक्षण की नई विधियों का उपयोग करने के लिए कैसे स्वीकार कर सकते हैं जब वे अपने शिक्षकों को इन नई विधियों का उपयोग करते हुए नहीं देख रहे हैं।
- कम सक्षम उच्चतर माध्यमिक शिक्षक–प्रशिक्षक: शिक्षक–शिक्षक कम सक्षम होते हैं। वे छात्र शिक्षकों के बीच वांछित स्तर के कौशल विकसित करने के लिए पर्याप्त कुशल नहीं हैं। उनमें विषय वस्तु पर पकड़ की कमी है। वे कक्षा की समस्याओं और छात्र शिक्षकों की व्यवहार संबंधी समस्याओं से निपटने में कम सक्षम हैं।
- सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों का अभाव: उच्चतर माध्यमिक शिक्षक शिक्षा में सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ अनियोजित हैं और पर्याप्त नहीं हैं। कई बार समय प्रबंधन की कमी के कारण इन गतिविधियों को नजरअंदाज कर दिया जाता है। लेकिन आजकल इस प्रतिस्पर्धी दुनिया में यह गतिविधि स्कूली शिक्षा का एक अभिन्न अंग बन गई है। विद्यार्थी शिक्षक इन गतिविधियों की योजना बनाने और उन्हें व्यवस्थित करने का उचित अवसर प्रदान नहीं करते हैं जो शिक्षकों के आने वाले व्यावसायिक जीवन में समस्याएँ पैदा करता है।
- शिक्षक शिक्षा संस्थानों पर नियंत्रण का अभाव: एनसीटीई एक नियामक संस्था है जो शिक्षक शिक्षा संस्थानों के कामकाज को नियंत्रित करती है और वहां गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर नियंत्रण रखती है। यह इन संस्थानों में शिक्षा के मानकों को निर्धारित और बनाए रखता है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में शिक्षक शिक्षा संस्थानों की संख्या में इतनी अधिक वृद्धि हुई है कि सभी संस्थानों की निगरानी करना मुश्किल हो गया है। इनमें से कुछ संस्थान केवल पैसे की खातिर गुणवत्ता से समझौता कर रहे हैं।
- रचनात्मकता की कमी: निस्संदेह ब्लूम ने अपने जीवन काल में रचनात्मकता को शीर्ष पर रखकर उच्च मानसिक क्रम के उद्देश्यों को संशोधित किया क्योंकि रचनात्मकता का

विकास मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत आवश्यक है। किसी भी कार्य को करते समय रचनात्मकता मौजूद रहती है। लेकिन शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में ज्ञान प्रदान करते समय इस कारक को नजरअंदाज कर दिया जाता है।

- जीवन कौशल विकसित करने में कमीः जीवन कौशल कुछ कौशल हैं जो व्यक्तिगत विकास और वृद्धि के लिए आवश्यक हैं। ये कौशल मनुष्य को जीवन की कठिनाइयों से निपटने में सक्षम बनाते हैं। ये कौशल हैं सोच कौशल– आत्म जागरूकता, समस्या समाधान, रचनात्मक सोच, निर्णय लेना और आलोचनात्मक सोचय सामाजिक कौशल– पारस्परिक संबंध, प्रभावी संचार और सहानुभूतिय भावनात्मक कौशल–तनाव प्रबंधन, सहानुभूति। मुख्य मुद्दा यह है कि शिक्षक–शिक्षा स्मृति आधारित है यानी इसमें छात्रों की कोई सक्रिय भागीदारी नहीं है, इसलिए छात्रों में जीवन कौशल के विकास में कमी है, जो छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक हैं।
- पर्यवेक्षण का अभावः कौशल और व्यवहार में वांछनीय सुधार लाने के लिए छात्र शिक्षक को प्रत्येक चरण पर उचित पर्यवेक्षण की आवश्यकता होती है। कक्षा की स्थितियों का सामना करने में आत्मविश्वास विकसित करने के लिए, कौशल का अभ्यास करते समय, पाठ विकसित करते और वितरित करते समय उन्हें पर्यवेक्षण की आवश्यकता होती है। लेकिन शिक्षक शिक्षा संस्थानों में अच्छे पर्यवेक्षण और पर्यवेक्षी कर्मचारियों की कमी है।
- उचित सुविधाओं का अभावः बड़ी संख्या में शिक्षा महाविद्यालयों की वित्तीय स्थिति खराब है। उनके पास प्रायोगिक विद्यालयों, प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों, छात्रावास और भवन जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। इनमें से कुछ तो किराए के भवनों में भी चल रहे हैं।
- समय अवधिः उच्चतर माध्यमिक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की एक वर्ष की अवधि बहुत लंबी बहस का मुद्दा रही है। शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम जिसमें सिद्धांत और व्यावहारिक और वास्तविक स्कूलों में इंटर्नशिप शामिल है, इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बहुत अधिक समय की आवश्यकता होती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (1998) भी शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की दो साल की अवधि की सिफारिश करती है लेकिन इसे लागू नहीं

किया जा सका। अतः वर्तमान शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की समयावधि बढ़ाने की आवश्यकता है।

- उचित मूल्यांकन का अभावः अध्यापक शिक्षा का मूल्यांकन दोषपूर्ण है। सत्र के आखिरी में परीक्षाएं आयोजित की जाती हैं। बाह्य एवं आंतरिक मूल्यांकन व्यक्तिपरक है। कभी–कभी अच्छा परिणाम प्राप्त करने के लिए शिक्षा महाविद्यालय अयोग्य उम्मीदवारों को भी अच्छा आंतरिक मूल्यांकन प्रदान करता है।
- कक्षा की चुनौतियाँः शिक्षकों के सामने आने वाली पर्याप्त समस्याओं में से एक हैं और एक अच्छे शिक्षक में इन सभी चुनौतियों को बहादुरी से पार करने का साहस होता है। शिक्षकों द्वारा सामना की जाने वाली कुछ सामान्य कक्षा चुनौतियों में टीम वर्क की कमी, न्यूनतम व्यक्तिगत समय, दीर्घकालिक लक्ष्यों के लिए काम करना, तर्क और छात्र बहाने आदि शामिल हैं। इन सामान्य कक्षा चुनौतियों को संबोधित करने से न केवल शिक्षक प्रतिधारण दर में सुधार करने में मदद मिल सकती है, बल्कि सफलता दर भी बढ़ सकती है। छात्र और शिक्षा की सर्वोत्तम गुणवत्ता।

वर्तमान शिक्षा परिदृश्य में शिक्षकों के सामने आने वाली कुछ शीर्ष कक्षा चुनौतियों पर एक नजर

बहुत सारा कागजी काम गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री तैयार करने के अलावा, स्कूल प्रबंधन के लिए उन्हें मनो–शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता, परामर्शदाता और बहुत कुछ सहित कई अतिरिक्त भूमिकाएँ सौंपना आम बात है। अध्ययन करना महत्वपूर्ण कक्षा चुनौतियों में से एक है जिन्हें उन्हें शिक्षण नोट्स के अलावा संभालना पड़ता है। इस तरह के अत्यधिक कागजी कार्यों में उनके नियमित शेड्यूल से बहुत अधिक समय निकल जाता है। इससे उनके द्वारा दिए जाने वाले काम की गुणवत्ता पर गंभीर असर पड़ सकता है। योजना बनाने के लिए समय की कमी पहले की तरह नहीं है जब उच्चतर माध्यमिक शिक्षक अपना पाठ्यक्रम पूरा नहीं कर पाते और आमतौर पर छात्रों का मूल्यांकन नहीं कर पाते। आज स्थिति अधिक चुनौतीपूर्ण है. उन्हें कक्षा में कई भूमिकाएँ निभानी होंगी। शिक्षकों को कई भूमिकाएँ निभाना

वास्तव में चुनौतीपूर्ण लग रहा है क्योंकि उनके पास योजना बनाने के लिए पर्याप्त समय नहीं है। अभिभावक, छात्र और स्कूल प्रबंधक। उन सभी को एक ही मीटर में संतुष्ट करना उनके लिए एक गंभीर चुनौती हो सकती है। ऐसा प्रबंधन जो सहायक नहीं है, छात्रों का एक वर्ग जिसमें टीम वर्क की कमी है और माता–पिता जो बिना समझे शिकायत कर रहे हैं, उनके लिए काम कठिन हो सकता है। साथ ही, इन 'मालिकों' के बीच बहस या लड़ाई भी हो सकती है और स्थिति को सुलझाने के लिए स्टैंड लेना उनके लिए कम से कम कुछ बार थोड़ा चिंताजनक हो सकता है। उन्हें कभी–कभी निष्पक्षता और अस्तित्व के बीच चयन करना होगा।

आसानी से जलन दूर करें शिक्षण को एक पेशे के रूप में अपनाना मजेदार और आरामदायक हो सकता है क्योंकि आप बच्चों और युवाओं के साथ रह सकते हैं जो आपको युवा बनाए रखता है। साथ ही, जैसेकि हमने चर्चा की, ऐसे कई कारक उन्हें आसानी से खत्म कर सकते हैं। अधिक काम का अहसास, असमर्थता, कम वेतन, व्यक्तिगत समय की कमी, कार्य–जीवन संतुलन की कठिनाई और उचित आराम न मिलने के कारण बर्नआउट हो सकता है। अत्यधिक काम करना सबसे ऊर्जावान शिक्षक को भी प्रभावित कर सकता है और इससे उनके कक्षा को संभालने के तरीके पर भी असर पड़ सकता है जिससे और अधिक गंभीर समस्याएं पैदा हो सकती हैं।

उचित फंडिंग का अभाव एक शैक्षणिक वर्ष के दौरान कई शिक्षण रणनीतियों और संबंधित चीजों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए प्रबंधन और अभिभावक फंड से उचित फंडिंग की आवश्यकता होती है। शिक्षकों को धन की कमी के बारे में चिंताएँ उठाते देखा गया है जो कक्षा को आगे ले जाने के उनके तरीके को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है।

मानकीकृत परीक्षण की सीमाएँ कक्षा में प्रत्येक छात्र एक विषय को एक ही तरीके से नहीं सीखता है और जिस तरह से आप उनका मूल्यांकन करते हैं, उसके मामले में भी यही स्थिति है।उच्चतर माध्यमिक शिक्षक अपने छात्रों के मूल्यांकन के रचनात्मक तरीकों के साथ आने के लिए उत्सुक होंगे और ये दृष्टिकोण उनकी सीखने की शैलियों का अध्ययन

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 1, अंक 4, जुलाई-सितम्बर 2024
Online Available : https://thati.net/

करने के बाद शुरू किए जा सकते हैं। हालाँकि, यदि प्रबंधन मानकीकृत परीक्षण विधियों पर जोर देता है, तो यह शिक्षकों के लिए एक कठिन काम होगा।

स्थिर तकनीकी उपकरण यह शिक्षा प्रणाली में एक उभरता हुआ अंतर (तकनीकी अंतर) है। हालाँकि इस वर्तमान महामारी की स्थिति में, आभासी कक्षाएँ शैक्षिक प्रणाली के लिए आशा की खिड़की बन गई हैं, लेकिन जब इसे अपने वास्तविक जीवन में उपयोग करने की बात आती है तो उिच्चतर माध्यमिक शिक्षकों के लिए भी यह मुश्किल हो गया है।

निष्कर्ष

शिक्षक शिक्षा की स्थिति में सुधार के लिए यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं जो इस प्रकार हैं: पाठ्यक्रम के संचालन के लिए नई और नवीन तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। उच्चतर माध्यमिक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को संशोधित किया जाना चाहिए ताकि शिक्षक नई प्रौद्योगिकियों द्वारा थोपी गई विभिन्न भूमिकाओं और कार्यों के लिए सुसज्जित हों। शिक्षकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को बढ़ाया जाना चाहिए ताकि प्रतिभाशाली लोगों को पेशे की ओर आकर्षित किया जा सके।

उच्चतर माध्यमिक शिक्षको को तनाव प्रबंधन तंत्र के बारे में प्रशिक्षित करना चाहिए ताकि वे छात्रों को तनाव को प्रबंधित करने और सामाजिक अलगाव, माता–पिता के दबाव और कड़ी प्रतिस्पर्धा के इस समय में खुद को बनाए रखने में मदद कर सकें। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को उच्चतर माध्यमिक शिक्षको को छात्रों के बीच राहत कौशल विकसित करने में सक्षम बनाना चाहिए। शिक्षकों को गंभीर रूप से सोचने, सही निर्णय लेने और दूसरों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखने में सक्षम होना चाहिए। शिक्षण में उपयोग की जाने वाली तकनीकों से स्वयं सीखने की आदत विकसित होनी चाहिए और शिक्षकों पर निर्भरता कम होनी चाहिए। इससे उन्हें अपने बारे में सोचने और कुछ नया करने में मदद मिलेगी।

संदर्भ

- भारत में ग्रामीण छात्रों के लिए चुनौतियाँ।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- चतुर्वेदी, अमित (30 जुलाई 2020)। ''' परिवर्तनकारी ' : नेताओं , शिक्षाविदों ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति का स्वागत किया ।
- ' ''कस्तूरीरंगन के नेतृत्व वाला पैनल स्कूलों के लिए नया पाठ्यक्रम विकसित करेगा''। प्दकपंदम•चतमे.बवउ. 22 सितंबर 2021। 16 अक्टूबर 2021 को मूल से संग्रहीत । 16 अक्टूबर 2021 को लिया गया ।
- ' ''राज्य शिक्षा बोर्डों को राष्ट्रीय निकाय द्वारा विनियमित किया जाएगाः ड्राफ्ट एनईपी''। टाइम्स ऑफ इंडिया । 30 अक्टूबर 2019. 27 फरवरी 2021 को मूल से संग्रहीत । 21 नवंबर 2019 को लिया गया ।
- ' ''यहां बताया गया है कि आप नई एनईपी पर खुशी क्यों मना सकते हैं। और आप क्यों नहीं मना सकते'' । तार . 31 जुलाई 2020. 1 अगस्त 2020 को मूल से संग्रहीत। 2 अगस्त 2020 को पुनःप्राप्त .
- ' जेबराज, प्रिसिलाय हेब्बार, निस्तुला (31 जुलाई 2020)। रमेश पोखरियाल निशंक कहते हैं, ''नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति तैयार करने से पहले किया गया कठोर परामर्श'' । द हिंदू । आईएसएसएन 0971–751ग . 6 अगस्त 2020 को मूल से संग्रहीत । 2 अगस्त 2020 को पुनःप्राप्त .
- ' रोहतगी, अनुभा, एड. (7 अगस्त 2020)। ''मुख्य बातें द्य एनईपी भारत में अनुसंधान और शिक्षा के बीच अंतर को कम करने में भूमिका निभाएगीः पीएम मोदी'' । हिंदुस्तान टाइम्स । 9 अगस्त 2020 को मूल से संग्रहीत । 8 अगस्त 2020 को पुनःप्राप्त .
- ' ''सरकार ने शिक्षा पर राज्य के खर्च को सकल घरेलू उत्पाद के 6ः तक बढ़ाने की योजना को मंजूरी दी'' । लाइवमिंट । 29 जुलाई 2020. 8 अगस्त 2020 को मूल से संग्रहीत । 30 जुलाई 2020 को पुनःप्राप्त .
- बीडब्ल्यू बिजनेस वर्ल्डः 7 अगस्त
- विकिपीडिया

- द न्यू इंडिया एक्सप्रेस
- एनईपी 2020: भारतीय शिक्षा क्षेत्र में बहुत कुछ देखने को है।
- ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: कैबिनेट ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को मंजूरी दी: मुख्य बिंदु'' । टाइम्स ऑफ इंडिया । 29 जुलाई 2020. 29 जुलाई 2020 को मूल से संग्रहीत। 29 जुलाई 2020 को पुनःप्राप्त .
- ''कक्षा 5 तक मातृभाषा में शिक्षण: नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर 10 अंक'' । एनडीटीवी.कॉम । 30 जुलाई 2020 को मूल से संग्रहीत । 30 जुलाई 2021 को लिया गया ।
- नंदिनी, एड। (29 जुलाई 2020)। ''नई शिक्षा नीति 2020 की मुख्य विशेषताएं: स्कूल और उच्च शिक्षा में बड़े बदलाव देखने को मिलेंगे''। हिंदुस्तान टाइम्स। 30 जुलाई 2020 को मूल सेसंग्रहीत। 30 जुलाई 2020को पुनःप्राप्त.
- 'जेबराज, प्रिसिला (2 अगस्त 2020)। ''द हिंदू समझाता है द्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में क्या प्रस्तावित किया गया है?'' . द हिंदू । आईएसएसएन 0971–751ग . 2 अगस्त 2020 को मूल से संग्रहीत । 2 अगस्त 2020 को पुनःप्राप्त .
- ए बी विश्नोई, अनुभूति (31 जुलाई 2020)। ''एनईपी '20: एचआरडी के साथ अंग्रेजी से क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा माध्यम में कोई बदलाव नहीं''। द इकोनॉमिक टाइम्स। 15 जुलाई 2021 को मूल सेसंग्रहीत। 31 जुलाई 2020को पुनःप्राप्त.
- ए बी सी डी गोहेन, मानश प्रतिम (31 जुलाई 2020)। ''एनईपी भाषा नीति व्यापक दिशानिर्देश: सरकार''। टाइम्स ऑफ इंडिया। 31 जुलाई 2020 को मूल सेसंग्रहीत। 31 जुलाई 2020को पुनःप्राप्त.
- चोपड़ा, रितिका (2 अगस्त 2020)। ''समझाया: नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पढ़ना''। इंडियन एक्सप्रेस । 1 अगस्त 2020 को मूल से संग्रहीत । 2 अगस्त 2020 को पुनःप्राप्त